REET 2025
LEVEL-2
ROJGAR WITH ANKIT
वंदन बैच
राज इतिहास एवं कला संस्कृति
मेवाड़ राजवंश
LIVE
07-02-2025 08:00 PM

मेवाड़ का राजवंश

- राजस्थान का सबसे प्राचीन राजवंश मेवाड़ को माना जाता है।
- मेवाड़ भीलवाड़ा, राजसमन्द, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, सलुम्बर)

-: उत्पत्ति :-

- अबुल फजल ने गुहीलों को इरान की नौ शेखा आदिल शाह की सन्तान है।
- कर्नल जैम्स टॉड ने शिलादित्या की सन्तान माना है। गौरीशंकर हीराचन्द औझा व सूर्यमल मिश्रण के अनुसार, सूर्यवंशी है।
- मुहनौत नैणसी तथा कर्नल टॉड ने गुहिलों की 24 शाखा बताई है।

- गुहिल वंश या रावल वंश- यह सूर्यवंशी माने जाते हैं। ये स्वंय को हिन्दुआ सूरज के नाम से जाने जाते है। उपनाम- मेवाड मेदपाट शिवी जनपद दशसहस्त्र शिवी जनपद की राजधानी मध्यमिका / मझमिका थी जिसे नगरी कहा जाता है। (नगरी चितौड़गढ़ में स्थित है ।)
- नगरी सभ्यता बेड़च नदी के किनारे चितौड़गढ़ में स्थित है जिसकी खोज 1904 में डा. भण्डारकर द्वारा की गई।
- राजस्थान का पहला खोजा गया स्थल नगरी सभ्यता का माना जाता है।

मेवाड़ राजधानी का क्रम-	शासक का नाम
नागदा	बप्पा रावल
आहड़	अल्हट
चित्तौड़गढ़	जैन सिंह
उदयपुर, गोगुन्दा	उदयसिंह
कुम्भलगढ़, चावण्ड	महाराणा प्रताप
चित्तौड़गढ़	अमरसिंह प्रथम
उदयपुर	राणा भीमसिंह

- गुहिल / गुहादित्य - 566 ई. में गुहिल ने मेवाड़ मे रावल / गुहिल वंश की नींव रखी जिसे मेवाड़ राजवंश का आदि पुरुष मूलपुरुष संस्थापक कहा जाता है।
- मेवाड़ के राजाओं का राजतिलक ऊंदरी गांव (मेवाड़) गांव का भील सरदार अपने अंगूठे से रक्त निकालकर करता था।
- चूहे के दान्तों के अवशेष - सोनू सभ्यता (जैसलमेर) से मिले है।
- ऊँट के दान्तों के अवशेष - ईशवाल (उदयपुर) से मिले है।

बप्पा रावल - 734-753

- मेवाड का वास्तविक संस्थापक बप्पा रावल को कहा जाता है।
- इन्हें कालभोज भी कहा जाता है।
- C. V. वैद्य ने बप्पा रावल को चार्ल्स मैटाल्स कहा है।
- बप्पा रावल के सोने के सिक्कों पर सूर्य अंकित है।
- बप्पा रावल को राजगुरू व चकवे गुरू भी कहा जाता है ।
- गुहिल वंश का सबसे प्रतापी शासक बप्पा रावल था ।

- बप्पा रावल के गुरू का नाम हारित ऋषि था, जिनके आर्शीवाद से बप्पा रावल ने 734 ई में मौर्य राजा मानमौरी का हराकर चितौड़गढ़ दुर्ग जीता था।
- बप्पा रावल को एकलिंगनाथ की उपाधि हारितऋषि ने दी थी।
- बप्पा रावल के ईष्ट देव एकलिंगजी थे तथा बप्पा रावल ने नागदा को अपनी राजधानी बनाया।
- बप्पारावल ने कैलाशपुरी (उदयपुर) में एकलिंगनाथ जी का मंदिर बनवाया।
- नोट- एकलिंगनाथ जी का मेला वैशाख कृष्ण त्रयोदशी को लगता है।

मेवाड़ के कुलदेवता एकलिंगनाथ जी हैं।

कुलदेवी बाणमाता हैं।

नोट- सिसोदिया राजवंश की कुलदेवी भी बाणमाता है।

मेवाड़ के आराध्य देवता - चार भुजा नाथ मन्दिर राजसमन्द

मेवाड़ की आराध्य देवी - चारभुजा माता (हल्दीघाटी में)

- बाणमाता का मंदिर कैलवाड़ा (उदयपुर) में है जिसका निर्माण लक्ष्मण सिंह ने करवाया था।

- **नोट-** मेवाड़ के राजा एक स्थान से दूसरे स्थान पर अपनी राजधानी स्थानांतरित करने से पहले एकलिंगनाथजी से आज्ञा लेते थे। जिसे आसकां लेना कहते हैं।
- मेवाड़ के राजा / राजवंश स्वंय को एकलिंगनाथ जी का दीवान मानते हैं।
- **नोट-** सबसे प्राचीन सम्प्रदाय - लकुलिश, एकलिंगनाथ / कापालिक / पाशुपतिनाथ / लिंगायुक्त / शैव सम्प्रदाय का माना जाता है।
- अलग-अलग प्रशस्तियों मे बप्पा रावल के बारे में विभिन्न प्रकार उल्लेख है।

1. कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति 1460 - अत्रि व उसके पुत्र महेश द्वारा रचित इस प्रशस्ति मे बप्पा रावल से लेकर महाराणा कुम्भा तक मेवाड़ मे जितना भी युद्ध अभियान हुए है। उनका वर्णन मिलता है।
2. कुम्भलगढ़ प्रशस्ति 1460 - महेश द्वारा रचित इस प्रशस्ति में बप्पा रावल को ब्राह्मण वंशीय या विप्र वंशीय माना गया है। यह प्रशस्ति कुम्भश्याम / सोमदेव मन्दिर (चितौड़गढ़) पर उत्कीर्ण है।
3. रणकपुर प्रशस्ति - यह प्रशस्ति 1439 मे देपा / देपाक ने लिखी। इसमें बप्पा रावल व कालभोज का अलग-अलग व्यक्ति बताया गया।
4. वैद्यनाथ प्रशस्ति- यह प्रशस्ति 1719 मे संग्राम सिंह द्वितीय के समय रूपभट्ट ने पिछोला झील के किनारे सीसारमा गांव (उदयपुर) में लिखी।

इस प्रशस्ति मे बप्पा रावल का हारित ऋषि के आर्शीवाद से मेवाड़ साम्राज्य मिलने का उल्लेख है।

5. एकलिंगनाथ प्रशस्ति 1488- यह प्रशस्ति आम्र कवि द्वारा रचित है। इसमें लिखी है कि बप्पा रावल ने मेवाड साम्राज्य से सन्यास ले लिया था।

नोट- बप्पा रावल मेवाड़ साम्राज्य से सन्यास लेने के बाद खुरासन (अफगानिस्तान) चला गया।

चितौड़गढ दुर्ग पर सर्वप्रथम आक्रमण अफगान मामू ने किया।

- बप्पारावल की समाधि नागदा (उदयपुर) में है।

नोट- सास-बहू का मन्दिर नागदा (उदयपुर) में है, जिसे सस्त्रबाहु का मन्दिर भी कहते हैं।

नोट- देवरानी-जेठानी का मन्दिर माऊण्ट आबू (सिरोही) में है जिसे नेमिनाथ मन्दिर भी कहते है। (शिल्पी - शोभनदेव)

नोट- कुंवारी कन्या व रसिया बालम का मंदिर भी माऊण्ट आबू (सिरोही) में है।

अल्हट

- सारणेश्वर प्रशस्ति - इसमें अल्हट की माता का नाम महालक्ष्मी दे रखा है।
- इसमें गोष्ठी की जानकारी तथा व्यापार की जानकारी मिलती है।
- वराह मन्दिर तथा मंत्रियों के नाम भी मिलते है।
- आटपुर प्रशस्ति- इसमें हूण राजकुमारी हरियादेवी का विवाह अल्हट के साथ हुआ जानकारी मिलती है।
- इसमें अल्हट की माता महालक्ष्मी के बारे में पता चलता है। जोकि वह राष्ट्रकूट वंश की है।
- अल्हट ने मेवाड़ राजवंश की दूसरी राजधानी आहड़ को बनाया।

- अल्हट ने सर्वप्रथम नौकरशाही प्रथा की शुरूआत की।
- अल्हट ने नागदा (उदयपुर) मे बराह (विष्णु का एक रूप) मन्दिर का निर्माण करवाया।
- नोट- एक वराह मन्दिर पुष्कर (अजमेर) में भी है जिसका निर्माण अर्णोराज चौहान ने करवाया।
- अल्हट को आलू रावल की उपाधि प्राप्त थी।

अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ- आ लू

Trick - लो सासू माँ जी सो पते।

लूनी, साबरमती, सूकड़ी, सागी, माही, जाखम, सोम, पश्चिमी बनास

रणसिंह

- रणसिंह के दो पुत्र क्षेम सिंह तथा राहप ने निम्न शाखा की स्थापना की।
- क्षेमसिंह ने रावल शाखा की स्थापना की जो आगे चल कर शासक बने।
- राहप राणा शाखा की स्थापना की ।

सामंत सिंह

- सामंत सिंह ने बडौदा (गुजरात) में गुहिल राजवंश की नींव रखी।
- सामंत सिंह के समय नाडौल शासक कीर्तिपाल चौहान ने मेवाड़ पर आक्रमण किया।
- सामंत सिंह तराईन के दूसरे युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तृतीय का साथ दिया तथा वीर गति प्राप्त की।

त्र सिंह

त्रसिंह का मध्यकालीन मेवाड़ इतिहास का स्वर्ण काल कहा जाता है।

सिंह ने अपनी व मेवाड़ की तीसरी राजधानी चितौड़गढ़ का बनाया।

ताला का युद्ध - 1227 में जैत्रसिंह व इल्तुतमिश के बीच हुआ जिसमें त्रसिंह ने इल्तुतमिश को हराकर चितौड़ पर अधिकार कर लिया।

ल्तुतमिश ने 1222 से 1229 तक जैत्रसिंह पर आक्रमण किये।

त्रसिंह के प्रमुख सेनापति बालक व मदन थे।

ट - जेत्रसिंह व इल्तुतमिश के बीच युद्ध का वर्णन "हम्मीर मद मर्दन / म्मीर मर्दन" में मिलता है जो जयसिंह सूरी ने लिखा।

- हम्मीर मर्दन, कुमारपाल चरित्र - जयसिंह सूरी
- हम्मीर महाकाव्य- नयनचन्द्र सूरी
- हम्मीर राछड़ा- राजरूप
- हम्मीर बन्धन- अमृत कैलाश
- हम्मीररायण- गोडऊ व्यास

तेजसिंह

- तेजसिंह को परमेश्वर परमभट्टारक तथा महाराजाधिराज की उपाधि प्रदान थी।
- तेजसिंह के समय दिल्ली शासक बलबन ने मेवाड़ पर असफल आक्रमण किया।
- तेजसिंह, जेत्रसिंह का पुत्र था। तेजसिंह के समय 1260 में मेवाड़ चित्रकला शैली का उद्भव हुआ।
- नोट- मेवाड़ चित्रकला शैली का स्वर्णकाल, जगतसिंह प्रथम का काल था।

- तेजसिंह के समय 1260 मे सबसे प्राचीन ग्रन्थ
  *श्रावकप्रतिकर्मणसूत्रचूर्णी जो ताम्र पत्र पर कमलचन्द ने लिखा।
- नोट- मेवाड़ का दूसरा प्राचीन ग्रन्थ 'सुपासनाहचरियम' (पार्शवनाथचरित्रम) है जिसे महाराणा मोकल के समय 1423 मे हीरानन्द ने लिखा था।

समर सिंह

- समर सिंह ने अल्लाउदीन खिलजी से गुजरात जाते समय टैक्स वसूल किया था।
- समर सिंह के अन्य पुत्र कुम्भकरण ने नेपाल में गुहिल राजवंश की नींव रखी।

रावल रत्नसिंह 1301 - 1303

- रावल वंश का अन्तिम प्रतापी शासक रावल रत्नसिंह था।
- इसके समय की प्रमुख घटना चितौड़ का प्रथम शाका थी।
- शेरशाह सूरी के दरबारी कवि मलिक मोहम्मद जायसी ने 1540 में अवधि भाषा में 'पद्मावत' ग्रन्थ लिखा।
- रत्नसिंह ने सिंहल द्वीप के राजा (श्रीलंका) गन्धर्वसेन की पुत्री पद्मिनी के साथ विवाह किया।
- पद्मिनी के तोते का नाम हीरामन था ।
- तोते का वैज्ञानिक नाम अलेक्जेण्ड्रीया पेराकीट

- हीरामन तोते को टूहिया तोता / हिन्दुओं का आकाश लोचन भी कहा जाता है।
- गागरोनी तोता, गागरोन दुर्ग (झालावाड़) मे पाया जाता है।

अलाऊद्दीन खिलजी के आक्रमण के कारण-

- खिलजी की साम्राज्य विस्तार नीति
- पद्मिनी की सुन्दरता (मुख्य कारण)
- चितौड़ दुर्ग का सामरिक महत्व व भौगोलिक स्थिति।
- दिल्ली से मालवा, गुजरात व दक्षिण भारत जाने वाला मुख्य मार्ग चितौड़ के पास होकर गुजरता था।

- दिल्ली सुल्तान अलाऊद्दीन खिलजी ने चितौड़ पर 28 जनवरी 1303 को घेरा डाला व 26 अगस्त 1303 को इस दुर्ग पर आक्रमण कर इस दुर्ग को जीतकर इसे अपने पुत्र खिज्र खाँ का सौंपकर इसका नाम खिज्राबाद रख दिया।

गोरा | बादल → रावल रतन सिंह के सेनापति

- चित्तौड़ के नाम खिज्राबाद की जानकारी धाईबा पीर के अभिलेख में मिलती है।
- चित्तौड़ में गम्भीरी नदी पर पुल का निर्माण करवाया।

चित्तौड़गढ़ का प्रथम शाका- 1303

- केसरिया - रत्नसिंह के नेतृत्व
- जौहर- पद्मिनी के नेतृत्व में 1600 महिलाओं ने किया।
- 'रत्नसिंह के साथ-साथ गौरा व बादल भी मारे गये।
- गौरा व बादल (चाचा भतीजा) पद्मिनी के साथ श्रीलंका से आये थे।
- (पद्मिनी का चाचा) बादल (पद्मिनी का चचेरा भाई)
- राघव चेतन एक संगीतकार था। इसे चितौड़ का विनाशक भी कहा जाता है क्योंकि इसी ने अलाऊद्दीन खिलजी को पद्मिनी की सुन्दरता के बारे में भडकाया था।
- राजस्थान का प्रथम शाका 1301 मे रणथम्भोर दुर्ग (सवाई माधोपुर में)

- राजस्थान का ऐतिहासिक शाका 1303 चितौड़गढ़ दुर्ग में
- राजस्थान व चितौड़ का सबसे बड़ा शाका 1534 (13000 महिलाओं ने जौहर किया)
- 1316 मे खिज्र खाँ ने चितौड़गढ़ दुर्ग कान्हडदेव चौहान (जालौर शासक) के भाई मुछाँला मालदेव को सौंप दिया, तथा बाद मे मालदेव ने इस दुर्ग को जेसा को सौंपकर वैरागी जीवन अपनाया।
- जौहर मेला चितौड़गढ़ में चैत्र कृष्ण एकादशी का भरता है जो पद्मिनी को समर्पित है।
- चैत्र शुक्ल एकादशी को राजस्थान का सबसे प्राचीनतम मल्लीनाथ पशु मेला तिलवाड़ा (बालोतरा) मे भरता है ।

- अलाऊद्दीन खिलजी के पुत्र खिज्र खाँ ने चित्तौड़ में गंभीरी नदी पर पुल बनाया।
- खिज्र खाँ ने अपना मकबरा बनवाकर उस पर अपने "पिता अलाऊद्दीन खिलजी के बारे में सिकन्दर-ए-सानी, ईश्वर की छाया, संसार का रक्षक लिखवाया।

सिसोदिया वंश

- गुहिल वंशीय राजा राहप के वंशज पुत्र
- लक्ष्मणसिंह

राणा हम्मीर 1326-1364

- अरी सिंह के पुत्र हम्मीर ने पैतृक घर पर वापिस अधिकार किया।
- राणा हम्मीर देव ने सिसोदा ग्राम (उदयपुर) में राणा / सिसोदिया राजवंश की नींव रखी।
- राणा हम्मीर ने 1326 में बनवीर को हराकर चितौड़ पर अधिकार किया।
- मेवाड़ व सिसोदिया राजवंश की कुलदेवी बाणमाता है ।
- राणा हम्मीर ने मालदेव चौहान (जालौर) की पुत्री सोनगिरी व उसके पति मोजाराम के सहयोग से बनवीर को हराकर चितौड़गढ़ दुर्ग जीता था।
- सिंगोली का युद्ध - 1326 में राणा हम्मीर ने मोहम्मद बिन तुगलक को हराया।

- कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति (अत्रि व महेश 1460) व कुम्भलगढ़ प्रशस्ति में हम्मीर को "विषटघाटी पंचानन (युद्ध में सिंह के सामने दिखने वाला) कहा गया है।
- गीत गाविन्द, रसिक प्रिया में राणा हम्मीर को "वीर राजा कहा गया है।
- कर्नल टॉड ने हम्मीर को "प्रबल हिन्दू शासक कहा है ।

मेवाड़ का उद्धारक - राणा हम्मीर ।

महाराणा प्रताप का उद्धारक - भामाशाह ।

मारवाड़ का उद्धारक - वीर दुर्गादास राठौड़ ।

राणा हम्मीर की आराध्य देवी- अन्नपूर्णा माता / बरवड़ी माता

क्षेत्र सिंह

- अजमेर को जीता।
- भीलवाड़ा पर अधिकार किया।
- हाड़ौती क्षेत्र पर अधिकार किया।
- बाँसवाड़ा - प्रतापगढ (छप्पन) के मैदान को जीता। मालवा के शासक दिलावर की हत्या कर अधिकार किया।

राणा लाखा 1382-1421

लाखा के समय जावर (उदयपुर) में जावर खान (सीसा + जस्ता) की खुदाई हुई।

लाखा के समय छितरमल बनजारे ने अपने बैल पीठू की याद 14वीं शताब्दी में पिछौला झील की खुदाई की जिसका निर्माण कार्य लाखा ने करवाया।

लाखा ने 60 वर्ष की आयु में हँसबाई (मारवाड़ के रणमल की बहन) से विवाह किया।

राणा लाखा लाख रूपये का आदमी

लाखा पिछोला झील

लाखा → जावर

- रणमल ने अपनी बहिन हँसबाई का विवाह (सशर्त) लाखा से करवाया की इससे जो सन्तान होगी वह मेवाड़ का भावी राजा बनेगा।
- राणा लाखा के पुत्र का नाम कुंवर चूड़ा था ।
- नोट- मेवाड़ का भीष्म पितामाह कुंवर चूड़ा को कहा जाता है।
- हँसाबाई से उत्पन्न संतान का नाम मोकल था ।
- नोट- राणा लाखा के दरबार में संस्कृत के विद्वान धनेश्वर व झोटिंग भट्ट थे।

लाखा → हंसाबाई

मोकल

पुत्र → कुंवर चूंडा

महाराणा मोकल 1421-1433

- मारवाड़ रियासत की पुत्री हँसाबाई व लाखा से उत्पन्न संतान मोकल था।
- मोकल का राज्यभिषेक 12 वर्ष की आयु में 1421 हुआ।
- महाराणा मोकल के समय मेवाड़ का दूसरा प्राचीन ग्रन्थ सुपासनाहचरियम् / पार्शवनाथचरित चित्रित किया गया। (हीरानन्द द्वारा)
- चितौड़गढ़ में 9 शताब्दी में भोज परमार ने त्रिभूवन नारायण मन्दिर का निर्माणा करवाया।
- इस मन्दिर का पुन: निर्माण महाराजा मोकल ने करवाया।
- त्रिभुवन मन्दिर का निर्माण चालुक्य शासकों ने करवाया।

- इस मन्दिर के शिल्पी मन्ना व फन्ना (मोकल के समय) थे।
- महाराणा मोकल के समय योगेश्वर व विष्णु भट्ट विद्वान थे।
- एकलिंगनाथ का परकोटा तथा द्वारिकानाथ मन्दिर का निर्माण करवाया।
- नागौर के शासक फिरोजखां तथा गुजरात के शासक अहमद शाह का हराया।
- हँसाबाई राणा चूड़ा / कुंवर चूड़ा को हमेशा शक की दृष्टि से देखती थी।
- इसलिए चूड़ा दुखी होकर होशगशाह के पास मालवा चला गया।
- रणमल मेवाड़ पर अधिकार करना चाहता था इसलिए उसने चाचा व मेरा (खातिन जाति) के सहयोग से मोकल की हत्या करवाई।
- रणमल ने चितौड़गढ़ में राणा चूड़ा के भाई राघव देव की हत्या कर दी।

महाराणा कुम्भा 1433-1468

- कुम्भा को राजस्थान स्थापत्य कला का जनक कहा जाता है।
- पिता- मोकल
- माता- सौभाग्य देवी
- पुत्री- रमाबाई जिसे जावर शिलालेख में वागेश्वरी की उपाधि दी।
- चित्रकला गुरू- हीरानन्द
- संगीत गुरू - सारगधर व्यास